इंदौर अब टेक्नो सिटी | आज शहर में छोटी-बड़ी 928 आईटी कंपनियां, इनमें कई राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय भी

35 साल में 3 से बढ़कर 928 हुईं आईटी कंपनी, 50 हजार युवाओं को मिला जॉब

देश-विदेश की बड़ी कंपनियों की पसंद बन रहा इंदौर, यहां शुरू कर रहे कैंपस

देव कुण्डल | इंदौर

1990 के शुरुआती दौर में इंदौर में गिने-चुने कंप्यूटर सेंटर खुले थे जहां बेसिक कोर्स और डीटीपी टाइपिंग सिखाई जाती थी। इसी दौरान शहर में छोटे स्तर पर शहर की इंपेटस और यश टेक्नोलॉजी नाम की दो आईटी कंपनियां आईं। सालों तक इन कंपनियों का ही बोलबाला रहा। एक दशक बाद सीआईएस तीसरी बड़ी स्थानीय आईटी कंपनी के रूप में उभरी। इनके अलावा इन्फोबींस, डाइस पार्क, स्वास्तिक, माइंडरुबी, वेबगिलिटी और इन्फोक्रेट्स सहित कई अन्य कंपनियों की साल-दर-साल संख्या बढ़ती रही।

कोरोना काल में इंदौर में देश-विदेश की कई नामी कंपनियों की आमद होना शुरू हुई। आज शहर में छोटी-बड़ी 928 आईटी कंपनियां हैं। इनमें राष्ट्रीय स्तर की टीसीएस, इन्फोसिस, परसिस्टेंट, कोलाबेरा और वैल्यू लैब हैं तो अंतरराष्ट्रीय स्तर की सीएससी, आईबीएम, राकुटेन, 47 बिलियंस, वर्ल्ड पे, ग्लोबंट, डीएक्ससी, कॉगनीजेंट, बैच मास्टर एवं एक्सेंचर प्रमुख हैं। शहर में कार्यरत आईटी कंपनियों में 50 हजार से अधिक युवाओं को रोजगार मिला है।

इंदौर में ग्रोथ बढ़ने का कारण : स्वच्छ और सस्ता शहर, अनुकूल माहौल, क्षेत्रवाद हावी नहीं

स्थानीय कंपनी सीआईएस में कर्मचारियों को ग्लोबल लेवल की कंपनियों की तरह तमाम सुविधाएं जैसे इंडोर गेम, जिम, क्रेच, फीडिंग रूम, रेस्ट रूम, स्मोकिंग जोन इत्यादि मुहैया हैं।

वर्ष 2014-15 में प्रदेश सरकार की आईटी पॉलिसी आने के बाद ही देश की बड़ी कंपनियों का रुख इंदौर की तरफ हुआ। इन कंपनियों में बेंगलुरु, मुंबई, पुणे जैसे शहरों में काम करने वाले करीब 10 से 12 प्रतिशत कर्मचारी इंदौर या प्रदेश के थे। इसलिए कंपनियों ने सोचा क्यों न इंदौर में भी ब्रांच शुरू की जाए। आईटी के जानकारों की माने तो इंदौर में ग्रोथ इसलिए तेजी से हो रही है क्योंकि यहां मिक्स कल्चर है और क्षेत्रवाद हावी नहीं है। यानी साउथ या महाराष्ट्र में स्थानीय लोगों को अधिक तवज्जो मिलती है। जबकि इंदौर में हर राज्य, हर भाषा और हर क्षेत्र के लोग रहते हैं। इसलिए यहां क्षेत्रवार भेदभाव नहीं है। यहां मराठी, गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी, दक्षिण भारतीयों की तादाद अच्छी खासी है। कर्मचारियों को अपनी बिरादरी के लोग मिल जाते हैं। स्वच्छ और सस्ता शहर होने के साथ ही कनेक्टिविटी बढ़ने और सरकारी सुविधाएं मिलने से आईटी कंपनियां इंदौर में अपना कारोबार जमाने लगी हैं।

तीन दोस्तों ने एक कमरे से स्टार्ट किया काम, दे रहे 1000 को रोजगार

वर्ष 2003 में सामान्य परिवार के 21-22 साल के तीन दोस्तों अमित अग्रवाल, अभिषेक पारिख और कुलदीप कुमार ने एक कमरे से साइबर इन्फ्रा स्ट्रक्चर (सीआईएस) नामक आईटी कंपनी शुरू की। बारी-बारी से 24 घंटे काम करते थे। 6 महीने कड़ी मेहनत के बाद इनका काम तेजी से बढ़ने लगा तो एक फ्लैट लेकर 15 युवाओं को रोजगार दिया। कुछ ही महीनों में स्टाफ की संख्या 500 तक पहुंच गई। 2019 में 1000 कर्मचारी हो गए। आज स्थानीय कंपनियों में सीआईएस एक बड़ा नाम बन चुकी है।

प्रमुख कंपनियों ने इंदौर में बनाए अपने दफ्तर

इंदौर की प्रमुख कंपनियां

कंपनी	कर्मचारी
यश टेक्नोलॉजी	6500
इंपेटस	3700
सीआईएस	1000
स्वास्तिक	1000
इंफोबींस	970
डायस पार्क	431
माइंडरुबी	350
वेबगिलिटी	150
इंप्रोक्रेट्स	100

बड़ी राष्ट्रीय कंपनियां

कंपनी	कर्मचारी
टीसीएस	5000
परसिस्टेंट	300
इन्फोसिस	2000

बड़ी विदेशी कंपनियां

कंपनी	कर्मचारी
डीएक्ससी	1500
कॉग्नीजेंट	200
एक्सेंचर	400
राकुटेन	700

▪ (स्रोत- आईटी कंपनी वेबसाइट्स)

दो स्थानीय कंपनियों को 5 सितारा रेटिंग

इंदौर में काम कर रही देश-विदेश की सभी कंपनियों को 5 सितारा रेटिंग प्राप्त है। स्थानीय कंपनियों में यश टेक्नोलॉजी और डायस पार्क 5 स्टार रेटिंग की हैं। सीआईएस, बेस्ट पीयर्स, हितेषी इन्फोटेक, इन्फोबींस लेवल 3 पर हैं। नेस्कॉम संस्था द्वारा आईटी कंपनियों को 1 से 5 सितारा तक रेकिंग दी जाती है। इसके लिए कंपनी की नेटवर्थ, नेटवर्किंग, वर्कर नंबर कुछ अन्य पैरामीटर पर रेटिंग मिलती है।

सिंगापुर व थाईलैंड की फ्लाइट शुरू हो जाए तो विदेशी कंपनियां आएंगी

आईटी एक्सपर्ट कुलदीप कुमार का मानना है कि सरकार यदि सिंगापुर और थाईलैंड की फ्लाइट शुरू कर दे तो अमेरिका, ब्रिटेन सहित यूरोप की कई कंपनियां यहां से कारोबार शुरू कर सकती हैं क्योंकि उक्त देशों तक यूरोप की फ्लाइट होने से सीधी कनेक्टिविटी बन जाएगी। अभी कई फ्लाइट चेंज करना पड़ती हैं।